जठर एवं अन्नाशय का रोग

जठर एवं अन्नाशय के रोग का परिचय जठर छोटी अन्ननलिका व अन्ननलिका के अंतरिक हिस्से मे किया जा सकता है । स्थान के अनुरुप इस रोग के अलग अलग नाम होते है । वायुयुक्त रोग पेट के हिस्से मे होता है ।छोटी अन्ननलिका मे होनेवाला रोग आतडियोंका रोग कहलाता है ।जठर एवं अन्नाशय का रोग कभी कम कभी अधिक समय तक रह सकता है ।

- हलिकोबॅक्टर पायलरी (H Pylore) इस जीवाणू के कारण जठर मे रोग की स्थापना होकर दर्द होता है।
- एस्प्रीन, आयब्रोफ्रोफेन एवं अन्य दर्द निवारक दवाऐं महिलाओ एवं बुजुर्गो मे अधिकतर पायी जाती है ।
- धुम्रपान
- क्ष- किरण उपचार (रेडिएशन)
- अनपेक्षित वजन वृध्दी
- अपचन
- उल्टियाँ
- छाती मे दर्द

रोग के लक्षण

- नाभी से दर्द प्रारंभ होकर छाती तक बढना
- भूख की आदत मे बदलाव
- जी मचलना
- रक्तयुक्त काला शौच

जाँच माध्यम

- एच पायलोरी जीवाणू की जाँच हेतू रक्तजाँच
- शौच की प्रयोगशाला मे उपयुक्त जाँच ताकी उसमे एच पायलोरी अथवा रक्त तो नही
- दुर्बीन के माध्यम से जाँच एवं चित्रिकरण जिससे जाँच मे समस्त जानकारी प्राप्त हो सके
- पेट के उपरी हिस्से एवं छोटी अन्ननलिका के आंतरिक हिस्से का क्ष -किरण (X-Ray) चित्रिकरण किया जाता है पुर्व मे सफेद रंग का द्रव्य पिलाया जाता है जिससे चित्रिकरण ठीक से होता है एवं रोग की उपयुक्त जाँच हो पाती है

उपचार इलाज

- जठर के भीतर के आम्ल के प्रमाण को कम करने हेतू दवाऐं दी जाती है एच पालरी से बचाव के लिए प्रतिजैविक दवाऐं भी दी जा सकती है ।
- दवाओंसे रोग कम न होने की स्थिती मे शल्यक्रिया हो सकती है जठर मे आम्ल का निर्माण हो तदहेतू संबंधित चेतना तंतुओ की शल्यक्रिया की जाती है अन्य प्रक्रिया मे जठर का कुछ हिस्सा निकाला भी जा सकता है ।जठर एवं अन्ननलिका मे छेद होने की स्थिती मे भी शल्यक्रिया की जा सकती है।

रुग्ण समुपदेशन

- तंबाकू उत्पादन टाले
- मद्यपान न करे
- एस्प्रिन तथा अन्य दर्द निवारक दवाऐं सावधानीपुर्वक वापरे
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर दुर्लक्षित ना करे
- नियमित रुप से हाथो को स्वच्छ रखे ताकी कोई रोग ना फैले तथापि उचित रुप से पका हुआ ही अन्न खाए

Reference : Micromedex online solution